२८-३

अथ

श्रीदेवकीजीना षट्पुत्रनो रास.

नववैराग्यरूप

तथा

[illegible]मनुष्यना अपलक्षणोनो संग्रह,

आ पुस्तक

स[illegible]रनी असारता दर्शावनारु होवाथी सर्व

[illegible]ोइने भणवा वांचवा माटे उपयोगी जाणीने

श्रीमुंबापुरीमां

श्रावक, भीमसिंह माणेक माटे

निर्णयसागर छापखानामां बाळकृष्ण रामचंद्रे छाप्युं.

संवत् १९६५. सने १९०९.

पोशशुद एकम.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीशांतिनाथाय नमो नमः ॥

॥अथ श्रीदेवकीजीना षट् पुत्रनो रास प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ नेम जिणंद समोसऱ्या, त्रणे कालना जाण ॥ भविक जीवने तारवा, प्रभु बोल्या अमृत वाण ॥ १ ॥ वाणी सुणी श्रीनेमनी, बूज्या छए कुमार ॥ मात पिताने पूछीने, लीधो संयमभार ॥ २ ॥ वैराग्ये संयम लीउं, धर्म सामग्री नीव ॥ छठ छठने पारणे, प्रभु कर दीउं जावजीव ॥ ३ ॥ निरंतर तपस्या करे, छए महोटा अणगार ॥ आज्ञा लेइ भगवंतनी, करे आतम उद्धार ॥ ४ ॥ नेम जिणंद समोसऱ्या, द्वारिका नगरी मझार ॥ एक दिन छठने पारणे, वयरागी अणगार ॥५॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ आगना लेइ भगवंतनी जी, छए ते बंधव सार ॥ गोचरी करवाने नीकल्या जी, द्वारिका नगरी मझार ॥ साधुजी भले रे पधारीया जी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनेकसेन आदे करी जी, छए सरिखा अण-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गार ॥ रूप सुंदर अति शोभता जी, नल कुबेर अनुहार ॥ सा० ॥ २ ॥ त्रण संघाडे करी संचर्या जी, मुनिवर महा गुणधार ॥ ईरियासमितिए चालता जी, षट् कायने हितकार ॥ सा० ॥ ३ ॥ पाडे पाडे फिरतां थका जी, गोचरीए मुनिराय ॥ मुनिवर दोय तिहां आवीया जी, वसुदेवजीना घर मांय ॥ सा० ॥ ४ ॥ देवकी देखी राजी हुइ जी, भले पधार्या मुनिराय ॥ सात आठ पग साहमा जइ जी, वली वली लागे जी पाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ हाथ जोडीने वंदन करे जी, तरण तारण मुनिराय ॥ दरिशण दीठां स्वामी तुम तणां जी, भव भवनां दुःख जाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ आज भली रे जागी दिशा जी, धन्य दिवस माहरो आज ॥ मुनिवर अम घर आवीया जी, तरण तारण जहाज ॥ सा० ॥ ७ ॥ मुह मांग्या पासा ढल्या जी, दूधडे वूठा मेह ॥ आज कृतारथ हुं थइ जी, आणी घणो धरम सनेह ॥ सा० ॥ ८ ॥ मोदक थाल भरी करी जी, वहोराव्या उलट भाव ॥ कृष्ण जिमण तणा लावीने जी, देवकी हर्षित थाय ॥ सा० ॥ ए ॥ जाताने वली पोहोंचाडीया जी, मुनिवर गया पोल बार ॥ थोडीसी वार हुइ जिसें जी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वली आव्या दोय अणगार ॥ सा० ॥ १० ॥ देवकी राणी मन चिंतवे जी, जूली गया छे अणगार ॥ वलीय पुण्याइ छे माहरी जी, जूले आव्या डुसरी वार ॥ सा० ॥ ११ ॥ सात आठ पग सामी जइने जी, लली लली लागे जी पाय ॥ आज कृतारथ हुं थइ जी, मुनिवर धस्या घर पाय ॥ सा० ॥ १२ ॥ मोदक थाल जरी करी जी, वहोराव्या डुसरी वार ॥ कृष्ण जिमण तणा लावीने जी, हैयडे हरष अपार ॥ सा० ॥ १३ ॥ जाताने वली पोहोंचावीया जी, मुनिवर रूप अगाध ॥ थोडीसी वार हुइ जिसें जी, त्रीजे संघाडे आव्या साध ॥ सा० ॥ १४ ॥ देवकी तव राजी हुइ जी, मन मांहे उपनो विचार ॥ आहार नवि मल्यो एहने जी, के जूले आव्या अणगार ॥ सा० ॥१५ ॥ जूल्यानुं तो कारण ए नहीं जी, दीसंता महोटा अणगार ॥ तीसरी वार ए आवीया जी, नहीं ए तो साधु आचार ॥ सा० ॥ १६ ॥ रूप कला गुणे आगला जी, दीसंता सम आकार ॥ पहेलां जो एहने पूछुं जी, तो नहीं ले अम घर आहार ॥ सा० ॥ १७ ॥ मोदक थाल जरी करी जी, वहोराव्या तीसरी वार ॥ कृष्ण जिमण तणा लावीने जी, देवकी मन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाव उदार ॥ सा० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि प्रत्ये प्रतिलाजीने, निरखी मुनि दीदार ॥ मनमां संशय उपनो, ते सुणजो सुविचार ॥ १ ॥ वात ए अचरज सारखी, मुखशुं कही न जाय ॥ कह्या विण स्वाद न नीपजे, विण कह्युं केम रहेवाय ॥ २ ॥ देवकी एम मन चिंतवी, प्रणमी बे कर जोमी ॥ साधु प्रत्ये पूठती हवी, आलस अलगुं डोमी ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग गोमी ॥ मृगापुत्रनी देशी ॥

॥ मुनिवर नगरी द्वारिका जी रे, बार जोयणने मान ॥ कृष्ण नरेसर राजीयो जी रे, जेहनी त्रण खंम आण ॥ मुनीसर एक करुं अरदास ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बहोंतेर क्रोम घर बाहेर डे जी रे, मांहे डे साठ करोम ॥ लोक बहु सुखीया वसे जी रे, मांहे राम कृष्णनी जोम ॥ मु० ॥ २ ॥ लाख क्रोमांरा धणी वसे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ माहरे पुण्य तणे उदये जी रे, मुनिवर आव्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ३ ॥ वमीय पुण्याइ डे ताहरी जी रे, एम बोल्या मुनिराय ॥ देवकी मनमां जाणीयुं जी रे, एहने खबर न कांय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ मु० ॥ ४ ॥ हुं पूछुं इण कारणे जी रे, साधां न लीधो आहार ॥ माहरे पुण्य तणे उदय जी रे, मुनिवर आव्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनिवर उत्तर एम कहे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ त्रण संघाड़ाशुं नीकल्या जी रे, अमे छए अणगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ वलतो मुनिवर एम कहे जी रे, तुं शंका मत आण ताहरे पहेला वहोरी गया जी रे, ते मुनिवर छुजा जाण ॥ देवकी लोज नहीं छे कांय ॥ ए आंकणी ॥७॥ देवकी मन अचरिज थयुं जी रे, ए किण माये जाया रे पुत ॥ रूप सुंदर अति शोजता जी रे, मुनिवर काकंदी भूत ॥ मु० ॥ ८ ॥ आदी करीने एम कहे जी रे, सांजलजो मुनिराय ॥ उत्पत्ति तुमारी किहां अछे जी रे, ते दीउं मुज बताय ॥ मु० ॥ ए ॥ कोण नयरीथी नीकल्या जी रे, तुमे वसता कोण ग्राम ॥ केहना छो तुमे दीकरा जी रे, कहेजो तेहनुं नाम ॥ मु० ॥ १० ॥ नाग शेठना अमे दीकरा जी रे, सुलसा अमारी माय ॥ जद्दिलपुरना वासीया जी रे, संयम लीधो छए जाय ॥ मु० ॥ ११ ॥ बत्रीशे रंजा तजी जी रे, बत्रीश बत्रीश दाय ॥ कुटुंब मेल्यो अमे रोवतो जी रे, विल विल करती माय ॥ मु० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ३८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवचन श्रवणे सुणी, चिंते चित्त मझार ॥ एहवो परिवार तजी करी, लीधो संयमभार ॥ १ ॥ हाथ जोडीने विनवे, सांभलजो मुनिराय ॥ किस्या दुःखथी तुमे नीकल्या, ते दीयो मुज बताय ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ खम खम मुज अपराध ॥ ए देशी ॥

॥ जातो काल न जाणता, सांभल रे बाइ ॥ रहेता महोल मझार ॥ दास दासी परिवारशुं जी, वली बत्रीश बत्रीश नार ॥ सांभल रे बाइ, म करीश मन उच्चाट ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ भगवंत नेम पधारीया ॥ सां० ॥ साधुने परिवार ॥ अमे भगवंतने वांदीया जी, वली सुणीयो धर्म विचार ॥ सां० ॥ म० ॥ २ ॥ वाणी सुणी वैरागनी ॥ सां० ॥ जाणयो अथिर संसार ॥ सुख जाण्यां सहु कारमां जी, अमे लीधो संयमभार ॥ सां० ॥ म० ॥ ३ ॥ चार महाव्रत आदर्यां ॥ सां० ॥ चारे मेरु समान ॥ त्यजी संसार संयम लीयो जी, दीधो छकायने अभयदान ॥ सां० ॥ म० ॥ ॥ ४ ॥ माता मेली अमे जूरती ॥ सां० ॥ तजी बत्रीशे नार ॥ सघलां वलवलतां रह्यां जी, में तो छोरु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीयो संसार ॥ सां० ॥ म० ॥ ५ ॥ छठ छठने पारणे ॥ सां० ॥ जावजीव निर्धार ॥ अंतर हमारे को नहीं जी, छे ए तप तणो विचार ॥ सां० ॥ म० ॥ ६ ॥ आज छठने पारणे ॥ सां० ॥ आव्या नयरी मझार ॥ दोय दोय मुनिवर जूजूआ जी, एम आव्या त्रीजी वार ॥ सां० ॥ म० ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली वली कीधी विनति, तुमे महोटा मुनिराय ॥ घरमां त्रोटो श्यो पड्यो, ते दीयो मुज बताय ॥ ॥ १ ॥ वलता मुनिवर बोलीया, तुमे सुणो मोरी माय ॥ घरमां त्रोटो जे पड्यो, ते देउं तुज बताय ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए देशी ॥

॥ उंचा महोल सोहामणा, रचीया विविध प्रकार रे माइ ॥ तद्वद् रूपे सारखी, परणावी बत्रीशे नार रे माइ ॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ परणीने जब घर आवीया, सासुने लागी पाय रे माइ ॥ तव वहूने ऋद्धि घणी जे, आपी ते मुज माय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ २ ॥ बत्रीश क्रोड सोनैया जाणो, बत्रीश रुपैया सार रे माइ ॥ बत्रीश बछ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाटकनां टोलां, ऋद्धि तणो नहीं पार रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ बत्रीश मुगुट मुगुट परवारुं, हेम कुंडल ने हार रे माइ ॥ एकावली मुक्तावली जाणो, कनक रयण वली सार रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ४ ॥ बत्रीश हार मोती तणा, बत्रीश रतन तणा जाण रे माइ ॥ तीसरा चौसरा हार अने वली, एम करुग ने तुरीय जाण रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ५ ॥ बत्रीश सोनाना ढोलीया, बत्रीश रूपाना जाण रे माइ ॥ बत्रीश सिंहासन सोनानां, इमहीज कलश वखाण रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ बत्रीश सोनानी कथरोटी, बत्रीश रूपानी जाण रे माइ ॥ बत्रीशे वली तवा सोनाना, तिमहीज थाल वखाण रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ हय गय रथ दास ने दासी, बत्रीश गोकुल जाण रे माइ ॥ बत्रीश सोना रूपाना दीवा, वली आरीसा वखाण रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ८ ॥ बत्रीश पीठ सोना रूपानां, इमहीज घरेणां अमूल्य रे माइ ॥ पगे पडतां सासुए दीधां, एकसो बाणुं बोल रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ९ ॥ एम ढए बंधवनी मली नारी, एकसो बाणुं जाण रे माइ ॥ एकसो बाणुंने ऋद्धि अपाणी, आगम वचन प्रमाण रे माइ ॥ पुण्य० ॥ १० ॥ एणी परे अमे सुख भोगवता, निर्गमता दिन रात रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माइ ॥ त्रोटो तो अमने कांइ न हुंतो, ए अमे छए भ्रात रे माइ ॥ पुएय० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वारंवार एम विनवे, तुमे महोटा मुनिराय ॥ वैराग पाम्या किण विधे, ते दीउं मुज बताय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ नेम जिणंदनी में वाणी सांजली, जाएयो अथिर संसारो जी ॥ काया माया रे जाणी कारिमी, कारिमो कुटुंब परिवारो जी ॥ १ ॥ मुनिवर जाखे तुं शंका मत करे ॥ ए आंकणी ॥ लाख चोराशी रे जीवायोनिमां, जमीयो अनंती वारो जी ॥ जन्म मरण करीने घणुं फरसीयो, न रही मणा लगारो जी ॥ मुनि० ॥ २ ॥ करम नचावे रे तेम ए नाचीयो, विविध बनावी वेशो जी ॥ पातक कीधां रे जीवे अति घणां, (पाठांतरे ॥ जन्म मरणे करी बहु वेदन सही,) नवि सुएयो धर्मोपदेशो जी ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ एहवी देशना अमे सांजली, जाणी सर्व असारो जी ॥ छए बंधव ततखण बूझीया, लीधो संयमजारो जी ॥ ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ पुएयने जोगे रे नरजव पामीया, लेइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धर्मनी आथो जी ॥ ए सुख जाएयां रे अमे तो कारिमां, कीधो मुगतिनो साथो जी ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ एहवां वयणां रे मुनिनां सांभली, देवकी करे विचारो जी ॥ बालक वयमां रे संयम आदर्यो, धन्य एहनो अवतारो जी ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ उप्पन कोमी रे माहेरी साहेबी, सामात्रण क्रोम कुमारो जी ॥ दीठा सघला रे माहारा राज्यमां, कोइ नहीं इणे अनुहारो जी ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ इणे इण वयमां रे संयम आदर्यो, पाले निरतिचारो जी ॥ धन्य धन्य माता रे ताहरी कुखने, जाया रत्न अमूलक सारो जी ॥ साधुजीना दरिशण दीठां राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ ८ ॥ अंग उपांग रे सघलां सुंदरु, सौम्य वदन सुखशीशो जी ॥ झोली पातरां लीधां हाथमां, तनु सुकुमाल मुनीशो जी ॥ साधु० ॥ ए ॥ गज जेम चाले रे मुनिवर मलपता, बोले वचन विचारो जी ॥ राजकुमरनी रे दीजे उपमा, जाणे कोइ देवकुमारो जी ॥ साधु० ॥ ॥ १० ॥ धन्य धन्य माता रे जेणे ए जनमीया, दरशणे दोलत थाय जी ॥ नाम लीधाथी रे नव निधि संपजे, पातक दूर पलाय जी ॥ साधु० ॥ ११ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ आरुी फरी फरी निरखीया, धन्य एहनो अवतार॥
बए सहोदर सारिखा, नहीं देखुं एहने अनुहार॥ १॥

॥ ढाल बही ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघकुमारने रे॥ ए आंकणी ॥ नयणे निहाले रे राणी देवकी रे, मुनिवर रूप रसाल ॥ लक्षण गुणे करीने शोजता रे, वाणी जेह-नी विशाल ॥ नय० ॥ १ ॥ जिणे घरथी ए पुत्र नीकल्या रे, शुं रह्यो होशे लार ॥ दीसंता दीसे घणुं सोहामणा रे, नल कुबेर अनुहार॥ नय० ॥ २ ॥ एणे अनुहारे रे माहरा राजमां रे, अवर न दीसे कोय॥ जो बे तो एक माहरो कृष्ण बे रे, एम मन अचरिज होय ॥ नय० ॥ ३ ॥ सीधुं सगपण कोइ दीसे नहीं रे, माहरुं हवणां जेम ॥ सूधी खबरज कोइ नवि पडे रे, एम किम जाग्यो महारो प्रेम ॥ नय० ॥ ४ ॥ श्रावकनो साधुने उपरे रे, होवे बे धरम सनेह ॥ में घणा दीठा साधु पूरवे रे, बशुं जाग्यो केम पूरव नेह ॥ नय० ॥ ५ ॥ जातां दीठा राणी देवकी रे, घणुं थइ दिलगीर ॥ हियरुं फाटे तेहनुं अति घणुं रे, नयणे विबूटे नीर ॥ नय० ॥ ६ ॥ स० ॥ ७ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ बालपणे बोल्यो हतो, अइमंतो अणगार ॥ आठ जणीश बाइ देवकी, बीजी नहीं नरत मझार ॥ १ ॥ एहवा पुत्र जनम्या विना, केम थाये आणंद ॥ माहरे संशय छे घणो, ते जांगे नेम जिणंद ॥ २ ॥ देवकी मन सांसो थयो, जइ पूछुं इणी वार ॥ केवल-ज्ञानी मन तणा, संशय जांगणहार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वंदण श्रीजिनराय ॥ सामग्री सर्व सजी करी, हरष धरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हांरे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल चाकर पुरुष तेमावीने, देवकी राणी बोले वाण रे लाल ॥ खिप्पामेव जो देवाणुप्पिआ, तुं रथ वेगो जोतराव रे लाल ॥ नेम वंदणने जायशुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हांरे लाल चाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जइने सज्ज कर्यो, रथ रुडो विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ २ ॥ ॥ हां० ॥ चाल उतावली अति घणी, वली उपगरण हलवां जाण रे लाल ॥ बाहिरली उवठाणशालमें, रथ उभो राखी आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ धोला ने माता घणा, वली ठोटी सींघमीआ जाण रे लाल ॥ दीसे घणुं ए सोहामणा, एहवा वृषन्न तुं आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ४ ॥ हां० ॥ सरिखाने चांदी नहीं, जोवा सरखी बलदनी जोम रे लाल ॥ चाले चाल उतावली, जेहने शिंगे पुठे नहीं खोम रे लाल ॥ नेम० ॥ ५ ॥ हां० ॥ बलदने जूलां शोन्नती, वली सोनानी नाथ रसाल रे लाल ॥ सोनानी न्नली शिंगमी, वली गले ते घूघरमाल रे लाल ॥ नेम० ॥ ६ ॥ हां० ॥ खेंचित सोनानी रासमी, वली सोना पट्टालां जोत्र रे लाल ॥ माथे ते घाल्यो सेहरो, तुं एणी परे कर उद्योत रे लाल ॥ नेम० ॥ ७ ॥ हां० ॥ वली ते रथ शणगारीयो, ते सूत्रे ठे विस्तार रे लाल ॥ बलद जुगतशुं जोतरी, लाव्यो उवठाणशाला मजार रे लाल ॥ नेम० ॥ ८ ॥ हां० ॥ न्हाइ धोइ मज्जन करी, वली पहेस्या नव नवा वेश रे लाल ॥माणिक मोती मुद्रिका,वली घरेणां हार विशेष रे लाल ॥ नेम० ॥ ए ॥ हां० ॥ आडंबर करी अति घणो, आवी बेठा रथ मांय रे लाल ॥ आगल बांधी शीकरी, रथ बेठी दृढ थाय रे लाल ॥ नेम० ॥ १० ॥ हां० ॥ साथे ते लीधी साहेलीयां, वली चाल्या ते मध्य बजार रे लाल ॥ चतुर ते बेठो सांघमी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए गृहस्थोनो आचार रे लाल ॥ नेम० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगर मध्ये थइ नीकल्या, साथे बहु परिवार ॥ नेम जिणंद जिहां समोसर्या, चाल्या तिणहीज ठार ॥१॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ धजा ने पताका हो दीठा राणी देवकी रे, प्रभु अतिशयनी वात ॥ विनय तो आदरी हो उत्तम साधुनो रे, ए तो जगत विख्यात ॥ १ ॥ सांसो निवारो हो प्रभु नेमजी रे ॥ ए आंकणी ॥ रथने उपरथी हो हेठे उतरी रे, दासीउं ने परिवार ॥ पायने अणुआणे हो राणी देवकी रे, साचवी अभिगम सार ॥ सांसो० ॥ २ ॥ देइ प्रदक्षिणा हो वांद्या नेमजी रे, पांचे अंग नमाय ॥ दो गुमा दो ढिंचण हो भूतले थापीने रे, मस्तक भूंइ लगाय ॥ सांसो० ॥ ३ ॥ ठए मुनि देखी हो संशय उपनो रे, हुं एम थइ रे उदास ॥ सांसो तो निवारण हो कारण आवीया रे, नेम जिणेसर पास ॥ सांसो० ॥ ४ ॥ गुण अनंता हो प्रभुजी तुम तणा रे, जो होये जीभडी अनेक ॥ राग द्वेष बेहुने हो स्वामी निवारीया रे, सहु माथे मन एक ॥ सांसो० ॥ ५ ॥ धन्य दिवस हो धन्य वेला घडी रे, नेट्या तरण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तारण ऊहाज ॥ मनना मनोरथ हो प्रभुजी माहरा रे, देखी रे रह्या छो महाराज ॥ सांसो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा वांदता, बोल्या श्री जिनराय॥ जिण कारण तुमे आवीया, ते सुणजो चित्त लाय ॥ १ ॥ नेम कहे सुणो देवकी, सांसो उपनो तुज्ज ॥ छए मुनिवर देखीने, तुं पूछण आवी मुज्ज ॥ २ ॥ तहत्ति कहे तव देवकी, जोमी दोनुं हाथ ॥ हा स्वामी सांसो पड्यो, ते भांगो जगनाथ ॥ ३ ॥ ए छए ताहरा दीकरा, तुं शंका म करे कांय ॥ छए वोरण जे आवीया, तेहनी तुं छे माय ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ रुडे रूप रे पुत्र तुमारा राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ तीन संघाडे तुम घर मुनिवर, आव्या त्रीजी वर ॥ ते देखीने सांसो पमीयो, छए एकण अनुहार ॥ रुडे० ॥ १ ॥ *नाग शेठ सुलसा घर वधीया, म करो* शंका लगार ॥ देवकी राणी ताहरा जनम्या, नल कुबेर अनुहार ॥ रुडे० ॥ २ ॥ नहीं निश्चे सुलसाना जाया, मानो वात अमारी ॥ उदर तमारे ए आलोव्या, नहीं कोइ मात अनेरी ॥ रुडे० ॥ ३ ॥ किण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विध पुत्र अमारा प्रभुजी, जोमी दोनुं हाथ ॥ ए जायानुं मरम न जाणुं, ते जाखो जगनाथ ॥ रुडे० ॥ ॥ ४ ॥ जीवयशा ताहरी जोजाइ, बोली ते अणविमासी ॥ अइमंतो रुषि आवंतो देखी, तेहनी कीधी हांसी ॥ रुडे० ॥ ५ ॥ धन जोबन ने मदनी माती, बोली ते खोटी रीत ॥ आवोने अइमंता मुनिवर, मलीने गाइये गीत ॥ रुडे० ॥ ६ ॥ मूरखनी गीतानी मानी, खबर पडे शी थारी ॥ देवकी गरज जे सातमो थाशे, ते तुज कुल क्षयकारी ॥ रुडे० ॥ ७ ॥ जरासंधनी तुं थइ पुत्री, कंस तणी धणीयाणी ॥ मारुं बोल्युं पाबुं न फरे, तें ते वात न जाणी ॥ रुडे० ॥ ॥ ८ ॥ एहवां वचन सुणीने काने, कंसने जाइ पुकारी ॥ अइमंते रुषिए वचन कह्यां जे, ते मुजने दुःखकारी ॥ रुडे० ॥ ए ॥ तेह वयण सुणीने कंसे, कीधो एक उपाय ॥ वसुदेव पासे बोलज लीधो, देवकी गर्ज जे थाय ॥ रुडे० ॥ १० ॥ ते बालक तो अम घर वाधे, तव माने वसुदेव ॥ कंस राय तिहां राजी हुउं, सुख जोगवे नित्यमेव ॥ रुडे० ॥ ११ ॥ जे जे गर्ज धरे छे देवकी, तव तिहां ते कंस राय ॥ सात चोकी ते उपर मूकी, कपटे खेले दाय ॥ रुडे० ॥ १२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ तिण काले ने तिण समे, ऋद्धिलपुर छे गाम ॥ नाग शेठ ते तिहां वसे, सुलसा घरणी नाम ॥ १ ॥ धण कण कंचण छे घणो, रुद्धि तणो नहीं पार ॥ पण मृतवन्ध्या ते सही, शोचे हृदय मझार ॥ २ ॥ तव ते छोरु कारणे, हरिणगमेषी देव ॥ आराधे ते एक मने, नित्य नित्य करती सेव ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केटले काले सेवा करतां, तूठो देव तिहां आय रे माइ ॥ किण कारण तुं मुजने सेवे, शानी छे तुज चाय रे माइ ॥ १ ॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए आंकणी ॥ वलती सुलसा एणी परे बोले, जोडी दोनुं हाथ हो देवा ॥ जिण कारण में तुजने आराध्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्य० ॥ २ ॥ धन तो माहरे झरीया झंझारा, तेहनी गरज न कांय हो देवा ॥ मूवा बालक जीवता थाय, ते मुज आपो वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ वलतो देवता एणी परे बोले, तुं सांजल मोरी वाय रे माइ ॥ मूवा बालक जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ४ ॥ वलती सुलसा एणी परे बोले, सांजल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मोरा नाथ हो देवा ॥ मूवा बालक जो तुजथी न जीवे, तो द्यो अवर उपाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ५ ॥ कोथलीमां जे नाणुं घाले, तेटलुं ते नीकलाय रे माइ ॥ पूरव पुण्यना संच जो होवे, तो सवि वातुं थाय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ वलती सुलसा एणी परे बोले, सांभल तुं चित्त लाय हो देवा ॥ तूगो पण अण-तूगा सरखो, माहारी गरज सरी नहीं कांय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ वलतो देवता एणी परे बोले, तुमे सुणजो चित्त ठाय रे माइ ॥ ततकालना जे बालक जनमे, ते तुजने देशुं लाय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ८ ॥ वलती सुलसा एणी परे बोले, सांभल तुं सुखदाय हो देवा ॥ हुं शुं जाणुं तुं केहना लावे, ते मुजने न सुहाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ए ॥ कंस राय जे मारण माग्या, देवकी केरा नंद रे माइ ॥ ते तुऊने हुं आणी देइश, करी देशां आनंद रे माइ ॥ पुण्य० ॥ १० ॥ सुलसा सुणीने राजी हुइ, देव गयो निज ठाण रे माइ ॥ अवधिज्ञाने विचारी जोवे, अनुकंपा मन आण रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकी ने सुलसा तणा, गर्भ समकाले कीध ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जनमसमय जाणी करी, तुज कुमरा तेणे लीध ॥ १ ॥
ते लेइ सुलसाने दीया, कुमर अति सुकुमाल ॥ मृतक
बालक सुलसा तणा, ते देव लीये ततकाल ॥ २ ॥
ते लेइ तुज पासे ठव्या, ठए एणी परे जोय ॥ निद्रा
मूकी गर्भ पालव्या, ते नवि जाणे कोय ॥ ३ ॥ मृतक
बालक कंसे लीया, ते जाणे सहु कोय ॥ ठए कुमर
महोटा थया, जणी गणी पंडित होय ॥ ४ ॥ बत्रीश
बत्रीश कन्या वर्‍या, एक लगन सुखकार ॥ पंच
विषय सुख जोगवे, दोगुंदक अनुहार ॥ ५ ॥ वाणी
सुणी वैरागथी, ठए लीयो संयमभार ॥ ए ठए पुत्र
छे ताहरा, तुं शंका म कर लगार ॥ ६ ॥ तव शंका
सहुए टली, वांदी नेम जिणंद ॥ साधु समीप
आव्या सही, आणी घणो आणंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ धन्य धन्य जे मुनिवर ध्याने रम्या जी ॥ ए देशी ॥

॥ देवकी ते आवी नंदन वांदवा जी, हैयडे उल्लसी
हरषित थाय रे ॥ निज वाठरुआने देखी करी रे,
जेम नव प्रसूता गाय रे ॥ देव० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
देह प्रफुल्लित तिहां अति घणी जी, रोम रोम उल्लसी
तन सार रे ॥ त्रटके तो त्रुटी कश कंचुआ तणी रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्तने विबूटी दुधां केरी धार रे ॥ देव० ॥ २ ॥ बल हैया मांहे तो मावे नहीं रे, जोतां लोचन तृप्ति न थाय रे ॥ तन मन रोमांचित हैयडुं उल्लस्युं रे, नजर न पाछी खेंची जाय रे ॥ देव० ॥ ३ ॥ एह सहोदर दीठा सारिखा रे, देवकी तो रही सामी निहाल रे ॥ नेत्र नरीयां आंसुमां थकी रे, जाणे त्रुटी मोती केरी माल रे ॥ देव० ॥ ४ ॥ वली निज अंगजने निरखी करी जी, उल्लस्यो अति घणो घणो नेह रे ॥ घर जातां पग साहामा वहे नहीं जी, फरी फरीने वांदे तेह रे ॥ देव० ॥ ५ ॥ वांदी नगवंतने नले नावशुं जी, दीठा बेठा ने उन्नाय रे ॥ अधन्य अपुण्य अकृत चिंतवे रे, मोहवशेथी दुःख थाय रे ॥ देव० ॥ ६ ॥ घरे आवीने राणी देवकी जी, आर्त्त रौद्र मन ध्याय रे ॥ एहवे अवसरे कृष्णजी आवीया रे, माताना वांदवा पाय रे ॥ देव० ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णे दूरथी देखीया, आज खरी दिलगीर ॥ पगे लाग्यो जाएयो नहीं, नयणे झरे तस नीर ॥ १ ॥ कहो माता किणे दुहव्या, केणे लोपी तुज कार ॥ वली वली कृष्णजी विनवे, पण उत्तर न दीये लगार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २ ॥ हाथ जोमी माधव कहे, सांभलो मोरी माय॥
तुजने वात कह्या विना, गरज न सरशे कांय॥ ३॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ रहो रहो राजेसरा केसरीया लाल ॥ ए देशी ॥
हुं तुज आगल शी कहुं कानैया लाल, वितक दुःखनी
वात रे ॥ गिरधारी लाल ॥ दुःखणी नारी छे घणी
॥ कानैया लाल ॥ पण दुःखणी ताहरी मात रे ॥
॥गि०॥हुं०॥ ए आंकणी ॥ १॥ जनम्या में तुज सारिखा
॥ का० ॥ एकण नाखे सात रे ॥ गि० ॥ एके हुलराव्यो
नहीं ॥ का० ॥ गोद खेइ किण मात रे ॥ गि० ॥
हुं० ॥ २ ॥ ए अए वाध्या सुलसा घरे॥ का० ॥ हुं
नजरे आवी देख रे॥ गि० ॥ वात कही प्रभु नेमजी
॥ का० ॥ जिणमें मीन न मेष रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥
॥ ३ ॥ अए तो नाग घरे उछर्या ॥ का० ॥ सुलसानी
पूरी आश रे ॥ गि० ॥ राजऋद्धि छोमी करी ॥ का०
॥ दीक्षा लीधी प्रभु पास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ४ ॥ अए
तो हवे अलगा रह्या ॥ का० ॥ एक आव्यो तुं
महारे पास रे ॥ गि० ॥ तुजने में नवि साचव्यो ॥ का०
॥ माहरे आव्यो तुं अठे मास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ५ ॥
सोल वरस अलगो रह्यो ॥ का० ॥ तुं पण यमुनाने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तीर रे ॥ गि० ॥ नंद यशोदाने घरे ॥ का० ॥ नाम धरावी आहीर रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ६ ॥ सोल वरस ठानो वध्यो ॥ का० ॥ पछी जघड्यां तह्यारां नाग्य रे ॥ गि० ॥ जल यमुनामें जाइने ॥ का० ॥ तें नाथ्यो काली नाग रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ७ ॥ बालपणाना बोलमा ॥ का० ॥ में एके न पूरी आश रे ॥ गि० ॥ आशा विलूधी हुं रही ॥ का० ॥ नारे मुइ सवा नव मास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ८ ॥ हलक न दीधो हालरो ॥ का० ॥ पालणीए पोढाय रे ॥ गि० ॥ हाल-रुया गावा तणी ॥ का० ॥ माहरी हौंश रही मन मांय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ए ॥ जगमां मोहटी मोह-नी ॥ का० ॥ उदय थइ माहरे आज रे ॥ गि० ॥ ते जीव जाणे माहरो ॥ का० ॥ के जाणे जिनराज रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १० ॥ आंगणीए न करी घमी ॥ का० ॥ आंगलीए वलगाय रे ॥ गि० ॥ साही साही ना मिल्यो ॥ का० ॥ हुं जाचण केम कराय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ११ ॥ कीधां याद आवे नहीं ॥ का० ॥ में केइ करम कठोर रे ॥ गि० ॥ नवांतरे कीधां हशे ॥ का० ॥ में किहां पाप अघोर रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १२ ॥ के पंखीमाला त्रोमीया ॥ का० ॥ के बाल विछो-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हां कीध रे ॥ गि० ॥ जीवजयणा कीधी नहीं ॥ का० ॥ के कूमां आल में दीध रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १३ ॥ में जीवाणी ढोलीयां ॥ का० ॥ के में मारी जू लीख रे ॥ गि० ॥ तमके जीव में शेकीया ॥ का० ॥ बहु जीव कीधो संहार रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ कठिन कर्म ते में कीयां ॥ का० ॥ के तोमी सरोवरपाल रे ॥ गि० ॥ ठाणे विंठी चांपीया ॥ का० ॥ न करी में शीलसंजाल रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १५ ॥ पांतिजेदज में कीया ॥ का० ॥ ईर्ष्या निंदा शराप रे ॥ गि० ॥ कामनी गर्जज गालीया ॥ का० ॥ के में कीधां प्रौढां पाप रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १६ ॥ अणगल नीर में वावर्यां ॥ का० ॥ के में पाड्या अंतराय रे ॥ गि० ॥ के साधुने संतापीया ॥ का० ॥ ते फल आव्यां धाय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मातावयण श्रवणे सुणी, तव ते यादव राय ॥ हाथ जोमी विनये करी, बोले मधुरी वाय ॥ १ ॥ पूर्व संबंधी देवता, तेमावुं मोरी माय ॥ ताहरा मनोरथ पूरवा, करीश हुं एह उपाय ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चंद्राउलानी देशी ॥ वलता कृष्णजी एम कहे हो, माजी म करो चिंता लगार ॥ जेम तुम नंदन थायशे हो, तिम हुं करीश विचार ॥ तिम हुं करीश विचार रे माइ, मनमें चिंता म करो कांइ ॥ देजो मुजने भलीय वधाइ, जब जनमे महारो न्हानो भाइ ॥ जीउ माताजी जीउ ॥१॥ माताचरण नमी करी हो, आव्यो पौषधशाल ॥ हरिणगमेषी देवता हो, मन समर्यो ततकाल॥मन समर्यो ततकाल मुरारी, अठमभक्तज चित्तमें धारी ॥ देवता आवी कहे तिण वारी, एहवो कष्ट कीयो केम भारी ॥ जाउ कानाजी जीउ ॥२॥ देव कहे कृष्णजी प्रत्ये हो,केम तेमाव्यो मुज॥कारज कहो मुजने सही हो, जे करवुं होये तुज ॥ जे करवुं होये तुज काम भारी, अमे छउं तुजने उपगारी ॥ आदेश द्यो अमने सुखकारी, काम कहोने ते शुभ सारी ॥ जीउ कांनाजी जीउ ॥ ३ ॥ देव प्रत्ये कृष्णजी कहे हो, सुणो तुमे चित्त धार ॥ लघु बांधव मागुं सही हो, कृपा करो हरिणगमेषी सार ॥ कृपा करो हरिणगमेषी सारी, होवे बालक लीलाकारी ॥ सुख पामे ज्युं मात अमारी, जादवकुल मांहे जयजयकारी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीउं देवाजी जीउं ॥ ४ ॥ देवकी नंदन आठमो हो, जेम थाये तेम जेम ॥ इण कारण तुम समरीयो हो, उंर नहीं कोइ प्रेम ॥ उंर नहीं कोइ प्रेम हमारे, बालकनी लीला चित्तमें धारे ॥ एह स्त्रीने होये जग आधारे, पुत्रने देखे माता जिवारे ॥ जीउं देवाजी जीउं ॥ ५ ॥ अवधिज्ञान प्रयुंजीने हो, देव कहे तेणी वार ॥ देवलोकथी चवी करी हो, देवकी कुखे अवतार ॥ देवकी कुखे अवतारज थाशे, सवा नव मास जेवारे जाशे ॥ पुत्र जनम्याथी सुख पाशे, दरिशण जेहनो सहुने सुहाशे ॥ जीउं कानाजी जीउं ॥ ६ ॥ नरजोबन वय पामशे हो, पुत्र होशे महा महोटो ॥ पण दीक्षा लेशे सही हो, वचन नहीं अम खोटो ॥ वचन अमारो खोटो न थाइ, माताने आवी दीध वधाइ ॥ माता हियडे हर्ष न मावे, कृष्णजी मनमां आनंद पावे ॥ जीउं माताजी जीउं ॥ ७ ॥ वलता कृष्णजी एम कहे हो, सांभलजो मोरी माइ ॥ देवरूप कुंवर होशे हो, देजो मुज वधाइ ॥ देजो मुज वधाइ रे माता, पुत्र होशे तुम जगत विख्याता ॥ मनमां राखो तमे सुखशाता, माताजी थाशे मुज लघु भ्राता ॥ जीउं माताजी जीउं ॥ ८ ॥ वयण सुणी कृष्णजी तणां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो, उपन्यो मन आणंद ॥ वलती देवकी एम कहे हो, तुं तो मुज कुलचंद ॥ तुं तो मुज कुलचंद रे जाइ, माहरी चिंता दूर गमाइ ॥ कृष्णे संतोषी निज माइ, पठी सुख विलसे आवासे जाइ ॥ जीउं कानाजी जीउं ॥ ए ॥ एणे अवसर देवथी चवी हो, देवकी उदर उपन्न ॥ सिंह सुपन देखी करी हो, मनमां हुइ सुप्रसन्न ॥ मनमां हुइ सुप्रसन्न सोजागी, जाइ पीयुने पूछवा लागी ॥ पीयु कहे सुण तुं वरुजागी, पुत्र होशे तुम गुणनो रागी ॥ जीउं माताजी जीउं ॥ १० ॥ तेह वचन देवकी सुणी हो, सुखमां गमावे काल ॥ सवा नव मासे जनमीयो हो, कुंअर अति सुकुमाल ॥ कुंअर अति सुकुमाल देखीने, नाम दीयो गजसुकुमाल हरषीने ॥ हरष पामे देवकी निरखीने, रीझे सहु कोइ गुण परखीने ॥ जीउं कुंअरजी जीउं ॥ ११ ॥ हवे माता निज पुत्रशुं हो, रमे रमाडे बाल ॥ मनना मनोरथ पूरवे हो, हाथो हाथ विसाल ॥ हाथो हाथ विसाल रे बाइ, रमाडे माता हरख उमाइ ॥ हालरीमां हूलरीमां गावे, दिन गमावे राजी थावे ॥ जीउं कुंअरजी जीउं ॥ १२ ॥ गजसुकुमाल महोटो थयो हो, बहु उछरंगे जणाय ॥ रूप विचक्षण जाणीने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो, सोमल घर मनाय ॥ सोमल घर विवाह मनायो, देवकी माता आणंद पायो ॥ दिन दिन वाधे तेज सवायो, जातो न जाणे काल गमायो ॥ जीउं कुंअरजी जीउं ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर श्रीनेम जिन, करता उग्र विहार ॥ ज्ञविक जीव प्रतिबोधता, ढोरुवता संसार ॥ १ ॥ एक दिन नेम पधारीया, सोरठ देश उदार ॥ द्वारिका नयरी आवीया, नंदन वनह मझार ॥ २ ॥ आज्ञा लइ वनपालनी, उतरीया तिणे ठार ॥ संयम तपे करी ज्ञावता, बहु गुण तणा ज्ञंमार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ राणपुरो रलीआमणो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ नेम जिणंद समोसस्या रे लाल, निर्लोज्ञी निर्मोय रे ॥ ज्ञविकजन ॥ दरशन दीठे तेहनुं रे लाल, ज्ञव ज्ञवनां दुःख जाय रे ॥ ज्ञ० ॥१॥ नेम जिणंद समोसस्या रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ सहस अढारे साधुजी रे लाल, साधवी चालीश हजार रे ॥ ज्ञ० ॥ निज आणाने मनावता रे लाल, शासनना शिरदार रे ॥ ज्ञ० ॥ ने० ॥ २ ॥ चोत्रीश अतिशये विराजता रे लाल,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पांत्रीश वाणी सार रे ॥ ज० ॥ शुज लक्षण सोहा-
मणां रे लाल, आठ ने एक हजार रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ३ ॥
प्रजु दर्शन देखी करी रे लाल, हरषे वांद्या पाय रे ॥
ज० ॥ वनपालक उतावलो रे लाल, कृष्ण पासे ते जाय
रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ४ ॥ वनपालक आवी करी रे लाल,
जोमी दोनुं हाथ रे ॥ ज० ॥ कृष्ण नरेसरने कहे
रे लाल, सांजलजो नरनाथ रे ॥ सुगुणी जन ॥ ने०
॥ ५ ॥ दरिशण जेहनुं इछता रे लाल, करता मनमें
चाह रे ॥ ज० ॥ पीयरीया उकायना रे लाल, श्रीनेमि
जिनराय रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ६ ॥ नाम गोत्र सुणी
रीऊता रे लाल, धरता मन अजिलाष रे ॥ ज० ॥
ते श्रीनेम पधारीया रे लाल, वनपाले एम दाख रे
॥ ज० ॥ ने० ॥ ७ ॥ दीजीये देव वधामणी रे लाल, पामी
मन आणंद रे ॥ ज० ॥ तेह वयण सुणी करी रे
लाल, तव हरख्या गोविंद रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ८ ॥
आसनथी तव उठीयो रे लाल, सात आठ पग सामो
जाय रे ॥ ज० ॥ प्रजुने कीधी वंदना रे लाल, पठी बेठो
निज गाय रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ए ॥ कृष्णे दीधी
वधामणी रे लाल, बोले मधुरी वाण रे ॥ सुगुणी जन
॥ सोनैया दीधा सामटा रे लाल, साढी बारे लाख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ सु० ॥ ने० ॥१०॥ वनपालकने विदाय करी रे लाल, पछी चाकरने तेमाय रे ॥ सु० ॥ कौमुदी नेर वजामीने रे लाल, सांजली सहु सज्ज थाय रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ ॥ ११ ॥ उठो रे लोको सिताबशुं रे लाल, रखे अवेला थाय रे ॥ सु० ॥ एक घमी दर्शन विना रे लाल, क्षण लाखीणो जाय रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १२ ॥ कोइ कहे दरिशण देखशुं रे लाल, कोइ कहे सुणशुं वाण रे ॥ सु० ॥ कोइ कहे संशय जेदश्यां रे लाल, कोइ कुतूहल जाण रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १३ ॥ स० ॥ १एद ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम विविध परे चिंतवी, बहु नारीनां वृंद ॥ स्नान करी शिणगारीयां, मनमां धरी आणंद ॥ १ ॥ नगर मध्ये थइ नीकल्यां, चढी हय रथ गयंद ॥ पंच अजिगम साचवी, वांद्या नेम जिणंद ॥ २ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥श्रीसुपास जिनराज,तुं त्रिजुवन शिरताज ॥ए देशी॥

॥ सोरठ देश मऊार, द्वारिका नगरी सार, आज हो वसुदेव रे राजा राज्य करे तिहां जी ॥ १ ॥ जाइ दशे दशार, बलजद्र कान कुमार, आज हो दीपे रे सोहागण राणी देवकी जी ॥ २ ॥ तस लघु पुत्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रसाल, नामे गजसुकुमाल, आज हो मात पिताने वालहो कुंवर प्राणथी जी ॥ ३ ॥ सुणी आव्या नेम जिणंद, साथे सुर नर वृंद, आज हो सेव्या रे सुखदायक स्वामी समोसर्या जी ॥ ४ ॥ जादव बहु परिवार, मन धरी हर्ष अपार, आज हो कृष्णादिक सहु उछरंगे नर्या जी ॥ ५ ॥ करी बहु अति माम, वंदन नेमि स्वाम, आज हो गजसुकुमाल ते साथे लेइने जी ॥ ६ ॥ विधिशुं वांदी जिनपाय, तव ते दोनुं नाय, आज हो उचित थानक तिहां आवी बेठा सही जी ॥ ७ ॥ तव ते जिन हित आण, नाषे मधुरी वाण, आज हो धर्मकथा कही बहु विस्तारशुं जी ॥ ८ ॥ देशना सुणी तेणी वार, बूज्यां सहु नर नार, आज हो वांदी रे व्रत ग्रहीने निज निज घर गया जी ॥ ए ॥ वाणी सुणी कृष्ण राय, वांदी जिनवर पाय, आज हो जेम आव्या तेम निज नगरे गया जी ॥ १० ॥ स० ॥ २०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवाणी श्रवणे सुणी, बूज्यो गजसुकुमाल ॥ घरे आवी माता नणी, बोले वचन रसाल ॥ १ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाणी सुणी जिनराज तणी काने पडी रे मारी ॥ अंतर हैयडानी आंख माहेरी उघडी ॥ वलती माता बोले हुं वारी ताहेरी रे जाया ॥ सुणी ए प्रभुजीनी वाणी पुण्याइ पूरी ताहरी ॥ १ ॥ कही श्री जिनराज ते साची में सईही रे माइ, लागी मीठी जेम साकर दूध ने दही ॥ दीजे अनुमति मुज संयम लेशुं सही, न करो आज्ञानी ढील पुत्रे ऐसी कही ॥ २ ॥ आज सभामां जैनधर्म वखाएयो जिनवरे, मुजने रुच्यो छे तेह छेह दुःखनो करे ॥ ए संसार असार के छार समो लख्यो, जन्म मरण दुःखकरण जलण जाले धख्यो ॥ ३ ॥ श्री जिनमारग तारण कारण उलख्यो, ए विना अवर न कोइ सकल शास्त्रे लख्यो ॥ कारागार समान आगार विहार छे, तजवो कोइक वार आखर पहेलां पछे ॥ ४ ॥ एक इहां अणगारपणुं सुखकार छे, माता द्यो अनुमति वात न को करवी अछे ॥ नंदनवचन सुणी एम जननी जलफली, हित वाणी दुःख आणी नाखे थइ गलगली ॥ ॥ ५ ॥ वाणी अपूरव वात पुत्रनी सांभली, घणुं मूर्छागत थाय धसकी धरणी ढली ॥ भांगी हाथांरी चूरु माथे केश विखख्या, वली हुउं उंठणो दूर धसकी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धरणी पड्या ॥ ६ ॥ मोह तणे वश आय सूरत झांखी थइ, शीतल वाय सचेत थइ बेठी जइ ॥ कुंअरना मुख साहमुं रहीने जोवती, मोह तणे वश बोले माता रोवती ॥ ७ ॥ तुज मुख मांहेथी वज्र वाणी ए केम पडी, माहरे छे तुज उपर आशा अति वडी ॥ हुं मुखथी तुज नाम न मेलुं अध घडी, रे जाया तुं जीवन अंधा लाकडी ॥ ८ ॥ चारित्र छे वत्स दुक्कर असिधारा सही, सुरगिरि तोलवो बांह के तरवो जलदहि ॥ उपाडी लोहजार के गिरि चडवो वही, तुं सुंदर सुकुमाल पाले केम थिर रही ॥ ए ॥ दोष बेंतालीश टाली करवी गोचरी, जमवुं जमरा जेम चिंता माने लोचरी ॥ कनक कचोलां छोड लेणी वत्स काचली, जावजीव लगे वाट न जोवी पाछली ॥ १० ॥ जे इह लोके आशंस के परलोके परमुहा, कायर ने कुपुरुषने ए सवि दुल्लहा ॥ धीर वीर गंभीरने शी दुक्कर कहा, मान करी ए वात बीहावो शुं मुहा ॥ ११ ॥ परिषह केरी फोज आवी जब लागशे, संयम नगर सजाव कोट तव जांगशे ॥ तहारे वज्र तुज जोर कांइ नहीं फावशे, पुत्र अमारुं ताम वचन मन आवशे ॥ १२ ॥ कोटे शुभ मनोरथ सुभट बेसाडशुं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सत्य रूप पमकोट ते मांहे समारशुं ॥ समता नाखे ज्ञान गोला जरी मारशुं, परिषह केरी फोज आवंती वारशुं ॥ १३ ॥ राग द्वेष दोय चोर जोरावर लूटशे, पुण्य खजानो माल अमूलक लूंटशे ॥ कांत्युं पींज्युं वस्त्र कपास ते थायशे, मन केरी मन मांहे के होंश समायशे ॥ १४ ॥ पहेरी उत्साह सन्नाह पराक्रम धनुष ग्रही, स्थिरता पणछ वैराग के बाण पुंखी करी ॥ साहमा पहेली मुठे हणशुं ते सही, वीरजननी तुज नाम कहावीश ते वही ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलती माता इम कहे, जोगवो जोग संसार ॥ जुक्त जोगी हुआ पठी, लेजो संयमभार ॥ १ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मांकण मूठालो ॥ ए देशी ॥ सांभल रे मोरी माता, ए तो विषयारस दुःखदाता हे ॥ निज मन समजाय लो ॥ मन समजाय लो मोरी माता, ए तो जनम मरण दुःखदाता हे ॥ निज० ॥ १ ॥ जेणे न कीयो धर्म लगार, ते तो पहोता नरक मझार हे ॥ निज० ॥ जे जे कीधां एणे संसार, ते तेहनी आवे लार हे ॥ ॥ निज० ॥ २ ॥ इण भव पीमा पावे, ते तो मूल कोय न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मिटावे हे ॥ नि० ॥ कुटुंब मिली सहु आवे, पण दुःख कोय न वहेंचावे हे ॥ निज० ॥ ३ ॥ तो परभव कुण आसी, जीव कीधां पाप पुण्य वासी हे ॥ निज० ॥ ते एकलडो दुःख पासी, बीजो आमो कोइ न थासी हे ॥ निज० ॥ ४ ॥ इण भवथी हुं मरीयो, लख चोराशीमां फरीयो हे ॥ नि० ॥ बाल मरणे हुं मरीयो, वार अनंती अवतरीयो हे ॥ निज० ॥ ५ ॥ रमणी रंग पतंग, नहीं पाले प्रीत अभंग हे ॥ नि० ॥ रमणी करावे बहु जंग, तेहशुं कुण करे संग हे ॥ निज० ॥ ॥ ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये साचा हे ॥ नि० ॥ इण संसारडो जगमो कूमो, में तो जिनमारग पायो रुमो हे ॥ निज० ॥ ७ ॥ हुं राचुं नहीं एमां उंमो, जेम पांजरा मांहे सूमो हे ॥ निज० ॥ ॥ ८ ॥ माताजी अनुमति दीजे, घमी एकनी ढील न कीजे हे ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजे, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निज० ॥ ए ॥ श्री नेमीसर पास, हुं तो पूरीश मननी आश हे ॥ नि० ॥ माये जाएयो कुंअर उदास, करे वली उत्तर तास हे ॥ नि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक बहु मंत्रवी, उत्तर पडुत्तर बहु कीध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ते विस्तार तो छे घणो, अंतगम मांहे प्रसिद्ध ॥ १ ॥ वलती कहे राणी देवकी, रे पुत्र तुं लघुवेश ॥ संयम दुक्कर छे सही, ते तुं केम पालेश ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ लाडलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥ वली एम कहे कुमार, आणी प्रेम अपार, आज हो अमीय रे समाणी वाणी सांजली जी ॥ १ ॥ उपनो मन वैराग, संयम उपर राग, आज हो धन सज्जन सहु दीसे कारिमो जी ॥ २ ॥ में जाण्यो सर्व असार, एकज धर्म आधार, आज हो बे कर जोमी माताने एम विनवे जी ॥ ३ ॥ माता पिताना पाय, प्रणमे सुत सुखदाय, आज हो अनुमति दीजे माता मुज जणी जी ॥ ४ ॥ सुण वत्स तुं लघुवेश, हुं केम देउं उपदेश, आज हो सुत पाखे मावमी एकली किम रहे जी ॥ ५ ॥ वचन अपूरव एह, श्रवणे सुण्यां गहगेह, आज हो जल-भर नयणे बोले राणी देवकी जी ॥ ६ ॥ ते पुत्र न पाले दीक्ष, पालवी सुगुरु शिख, आज हो घर घरनी जिक्षा भमंता दोहिली जी ॥ ७ ॥ जावजीव निर्धार, चालवुं खांमाधार, आज हो बावीश परिषह बलवंत जीतवा जी ॥ ८ ॥ शाल दाल घृत गोल, कोण देशे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तंबोल, आज हो केशरीये वाघे रे कस कोण बांधशे जी ॥ ए ॥ नित्य नवां वस्त्र सिणगार, करवा मनोहर आहार, आज हो अरस निरस आहार ने मेलां कापडां जी ॥ १० ॥ सहेज बिढाइ फूल सार, तोहे नावे निंद लगार, आज हो मानसंथारे सुवुं दिन दिन दोहिलुं जी ॥ ११ ॥ पीवुं उनुं नीर, सहेवुं दुःख शरीर, आज हो चुजाए करीने सागर तरवो दोहिलो जी ॥ १२ ॥ बावल देवी बाथ, लोह चणा लेइ हाथ, आज हो मीण तणे रे दांते चावण दोहिलो जी ॥ १३ ॥ वलतो कुमर अबीह, वचन कहे जेम सिंह, आज हो कायरनुं हियडुं रे कंपे अति घणुं जी ॥ १४ ॥ हुं तो सिंह जेम शूर, पालुं संयम पूर, आज हो चारित्र पाली शिवरमणी वरुं जी ॥ १५ ॥ इंद चंद नरिंद, दाणव देव मुणींद, आज हो अथिर संसारमें सबल केइ आथडे जी ॥ १६ ॥ तीर्थंकर गणधार, वासुदेव चक्री सार, आज हो एहवा वीर पण थिर कोइ नवि रह्या जी ॥ १७ ॥ तो अवरां कुण वात, एम अवधारो मात, आज हो मोह निवारण थाउं कामी मुज तणा जी ॥ १८ ॥ तो शुं अत्यंत स्नेह, एम जीव दोय देह, आज हो तुज विहुणी माता केम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रहे जी ॥ १६ ॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काजल समान, आज हो उंबर फूल परे सुणतां दोहिलो जी ॥ २० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो होय, आज हो मुज मन वाल्हो अति घणो तुं सही जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाहनो बाल, केलि गरन्न सुकुमाल, आज हो न्नोग योग्य छे अवस्था ताहरी जी ॥ २२ ॥ रूप कला गुणपात्र, निरुपम निर्मल गात्र, आज हो सोमलरी बेटी परणो पद्मणी जी ॥ २३ ॥ मीठी प्रन्नु अमृत वाण, में कीधी मात प्रमाण, आज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी ॥ २४ ॥ जाएयो में अथिर संसार, लेशुं संयमन्नार, आज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो जी ॥ २५ ॥ पछे लेजो संयमन्नार, आदरजो आचार, आज हो कन्या विचक्षण परणो लाखकी जी ॥ २६ ॥ पुत्र मुज मनहुंती चाल, जाणुं रमाखीश बाल, आज हो तुज उपर मुज आशा छे घणी जी ॥ २७ ॥ मात पिता ने न्नाय, घणुंक मोह लपटाय, आज हो कह्युं रे न माने कुंअर सुलक्षणो जी ॥ २८ ॥ घणुं रे थइ दिलगीर, नयणे विटूटे नीर, आज हो विलाप करे छे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हलधर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माधव जाय, ततक्षण विगर बुलाय, आज हो मधुर वचनशुं माधव एम कहे जी ॥ ३० ॥ टाळुं जाइ ताहरुं दुःख, विलसो मनोहर सुख, आज हो वाय विना दुःख निवारुं ताहरुं जी ॥ ३१ ॥ जनम मरण वारो मोय, सुख मानी रहुं तोय, आज हो दुःखहरण सुखकरण तुमे बांधवा जी ॥ ३२ ॥ देव दाणव इंद्रराय, ए केणेही न मिटाय, आज हो कर्मक्षय थकी सहुए टळे जी ॥ ३३ ॥ क्षय करवा निज कर्म, लेशुं संयमधर्म, आज हो अनुमति दीजे बंधव मुज जणी जी ॥ ३४ ॥ कृष्ण कहे एम वाय, सुण सुण मोरा जाय, आज हो राजे बेसाडुं द्वारामतिनुं ए सही जी ॥ ३५ ॥ वरतावुं ताहरी आण, करुं हुं हुकम प्रमाण, आज हो आणा वरतावुं सघळे ताहरी जी ॥ ३६ ॥ मौन रह्या तेणी वार, कृष्ण हरख्या निर्धार, आज हो सज्जन परिवार सहु राजी हुवा जी ॥ ३७ ॥ करवा ते कृष्ण काज, लेइ बेसाड्या राज, आज हो हुकम चलावे गजसुकुमालनो जी ॥ ३८ ॥ कृष्ण कहे एम वाण, रायहुकम प्रमाण, आज हो हाथ जोमीने केशव एम कहे जी ॥ ३९ ॥ वरतावो माहरी आण, करो हुकम परिमाण, आज हो दीक्षा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

महोत्सवनी अब तइआरी करो जी ॥ ४० ॥ खजंमार खोलाय, तीन लाख नाणुं कढाय, आज हो वेगे रे मंगावो रजोहरण पातरां जी ॥ ४१ ॥ नारायणे तेमहीज कीध, आज्ञा सेवकने दीध,आज हो सामग्री सरवे संयमनी सज्ज करे जी ॥ ४२ ॥ कुंअरने निश्चल जाण, माता अमृत वाण, आज हो आशिष दीये ठे राणी देवकी जी ॥ ४३ ॥ धन्य दहाडो माहरो आज, सफल फल्यां मुज काज, आज हो चरण-ना शिष्य थाशुं श्रीनेमनाथना जी ॥ ४४ ॥ वाजां ने नीशाण, बेसारी शिबिका आण, आज हो आणीने सोंप्या ठे श्रीजगनाथने जी ॥ ४५ ॥ रहेती एहने तंत, हुं तो इष्टने कंत, आज हो तुमने रे सोंपुं बुं प्रनुजी शिष्य नणी जी ॥ ४६ ॥ प्रनुजीए दीक्षा दीध, कुंअरनुं कारज सीध, आज हो माता पिता रे कुंअर प्रत्ये कहे जी ॥ ४७ ॥ धरजो मन शुनध्यान, दिन दिन चमते वान, आज हो सिंह तणी परे संयम पालजो जी ॥ ४० ॥ तव ते देवकी नार, कहे प्रनुने वारंवार, आज हो तप करतां एहने तमे वारजो जी ॥ ४ए ॥ एणे ए नवह मकार, फुःख नवि दीठुं लगार, आज हो देव तणी परे सुख एणे नोगव्यां जी ॥ ५० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भुख्या तरस्यानी चाह, करजो एहनी संभाल, आज हो जालवजो एहने रुमी परे घणुं जी ॥ ५१ ॥ माहरी हती पोथीने आथ, ते दीधी तुम हाथ, आज हो जेम जाणो तेम हवे तमे राखजो जी ॥ ५२ ॥ स० ॥ २७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही पाछा वळ्या, देवकी ने परिवार ॥ पछी कृष्ण पण वांदीने, पहोता नगर मझार ॥ १ ॥ प्रभुजीए दीक्षा देइ, शिखव्यो सर्व आचार ॥ प्रभु पासे विनये करी, जणे अंग इग्यार ॥ २ ॥ ईर्यासमिति शोभता, थया गज अणगार ॥ छक्काय तणी रक्षा करे, पाळे पंचाचार ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ सोरठ देश सोहामणो ॥ ए देशी ॥

॥ दीक्षा दिन प्रभु वांदीने, मशाणे संध्याकाल रे ॥ पश्चिमा ठाइ काउस्सग्ग रह्या, तिहां सोमल आव्यो चाल रे ॥ सोभागी शुक्लध्याने चढ्यो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मुनि देखी वैर उल्लस्यो, थयो कोपांतर काल रे ॥ विण अवगुण मुज पुत्रीनो, जनम खोयो तें आल रे ॥ सो० ॥ २ ॥ एम बहु रीसे परजळी, बांधी माटीनी पाल रे ॥ केसु वरणा माथे धर्या, धगधगता खेर अंगार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ तापे तुंबडी खदखदे, फरुफरु फूटे हारु रे ॥ चाम चरुचडे नसा तडतडे, लोही वहे निलारु रे ॥ सो० ॥ ४ ॥ धीर वीर मुनि ध्याने चड्या, करे निज धर्म संभाल रे ॥ जे दाजे ते माहरुं नहीं, पण नाएयो मने करी काल रे ॥ सो० ॥ ५ ॥ अनादि कालनो जीवडे, कर्यो प्रवृतिनो संग रे ॥ पुद्गलरागे रीजीउं, नव नवे ते रंग रे ॥ सो० ॥ ६ ॥ कुमति सेनाने वश पड्यो, जीव रह्यो तुं संसार रे ॥ अनादि कालनो भूली गयो, हवे करो निज विचार रे ॥ सो० ॥ ७ ॥ सुमति निवृत्ति अंगीकरी, टाली अनादि उपाधि रे ॥ क्षमा नीरे आतम सिंचीयो, आणी परम समाधि रे ॥ सो० ॥ ८ ॥ अपूरवकरण शुक्लध्याननो, त्रीजो पायो क्षपकश्रेण रे ॥ परम शुक्ल लेश्या वरी, तो शुं बाले अग्नि तृण क्षीण रे ॥ सो० ॥ ए ॥ घातिकर्म खपावीयां, टाल्यो कर्मविकार रे ॥ करम टाली केवल लही, पहोता मुक्ति मझार रे ॥ सो० ॥ १० ॥ केवलमहोत्सव सुरे कर्यो, पठी पूछ्यो देवकी मोरार रे ॥ सुर वृत्तांत सवे कह्यो, ते सूत्रे छे विस्तार रे ॥ सो० ॥ ११ ॥ सात सहोदर मुक्ति गया, वांदी नेम जिणंद रे ॥ नित्य एहवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि संभारीये, लहीये परमानंद रे ॥ सो० ॥ १२ ॥ धरम दलाली कृष्णे करी, खरच्युं द्रव्य अपार रे ॥ चार तीर्थने साह्य करी, वली वधामणी दीधी सार रे ॥ सो० ॥ १३ ॥ तिणे तीर्थंकरगोत्र बांधीयुं, सुणजो सहु नर नार रे ॥ त्रीजीथी नीकली अमम नामे, जिन होशे जग आधार रे ॥ सो० ॥ १४ ॥ करम खपावी केवल लही, पहोंचशे मुक्ति मझार रे ॥ एहवुं जाणी जे धर्म आदरे, ते लेशे भवजलपार रे ॥ सो० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०७ ॥ समाप्त ॥ ॥ इति श्रीदेवकीजीना षट् पुत्रनो रास समाप्त ॥

॥ अथ मूर्खशतक प्रारंभः ॥

मूर्ख जनमां आ नीचे लखेलां एकसो अपलक्षण मांहेलां घणांक अपलक्षण दीठामां आवे छे तेनां नाम.

१ उद्यम करवा समर्थ छतां उद्यम न करे.
२ विद्वानोनी सभामां पोतानी प्रशंसा करे.
३ वेश्यानां वचन उपर विश्वास राखे.
४ पाखंडी कृत आडंबर देखी प्रतीति आणे.
५ जूगार रमी धन पेदा करवानी आशा राखे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६ कर्षणथी धन पेदा करवानो संदेह आणे.
७ निर्बुद्धि ढतां मोटां कार्य करवानी वांछा करे.
८ वणिक ढतां एकांते कोइ ढंदमां रसिक होय.
९ माथे देवुं करी अणखपती वस्तु वेचाती लीए.
१० पोते वृद्ध ढतां दश वर्षनी कन्या परणे.
११ अणसांजल्या ग्रंथोनुं व्याख्यान करे.
१२ जगतमां जे प्रत्यक्ष वस्तु होय तेने ढानी ढांके.
१३ पोतानी स्त्री चपल ढतां ईर्ष्या राखे.
१४ समर्थ वैरी ढतां तेनाथी शंकाय नहीं.
१५ धन आपीने पछी पश्चात्ताप करे.
१६ मोटा कवीश्वरनी साथे विवाद करे.
१७ अप्रस्तावे परवडुं बोले.
१८ बोलवाने प्रस्तावे मौन धारण करे.
१९ लाज थवाने अवसरे कलह करवा बेसे.
२० जोजनवेलाए रोष करे.
२१ घणो लाज थतो देखी धनने विखेरी मूके.
२२ ज्यां सामान्य जाषा बोलवी जोइए, तिहां कठिन संस्कृत जेवी जाषा बोले.
२३ पुत्राधीनपणाए अने धने करी दयामणो थाय.
२४ स्त्रीना पीयरपक्षवाला पासे प्रार्थना करे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२५ स्त्रीने हास्ये रीसाणो थको विवाह करे.
२६ पुत्र उपर रीसाणो थको तेने बंधनमां घाले.
२७ कामुकनी स्पर्द्धाए करी दातार थाय.
२८ देणदारनी प्रशंसाथी अहंकार करे.
२९ बुद्धिना गर्वे करीने हितनां वचन न सांभले.
३० कुलने मदे करी कोइनी चाकरी न करे.
३१ कामी थको घणुं दुर्लभ एवुं द्रव्य दीए.
३२ द्रव्य वगेरे उधारे देइने पाछुं मागे नहीं.
३३ लोभी राजानी पासेथी लाभनी वांछा करे.
३४ दुष्ट राजा छतां तेनी पासे न्यायनी इछा करे.
३५ आपमतलबी साथे स्नेहनी आशा राखे.
३६ दुष्ट मित्र छते पोते निर्भयपणे रहे.
३७ कृतघ्ननो उपकार करवा माटे प्रयास करे.
३८ निरस माणसने अर्थे पोताना गुण वेचे.
३९ पोताने समाधि छतां वैद्य औषध करे.
४० पोते रोगी थको कुपथ्य करवा जाय.
४१ लोभे करी पोताना स्वजननो त्याग करे.
४२ वचने करी पोताना मित्रने दुहवे.
४३ लाभनी वेलाए आलस करे.
४४ ऋद्धिवंत छतां प्रिय साथे कलह करे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

४५ ज्योतिषी निमित्तियाना कहेवाथी राज्यने वांछे.
४६ मूर्ख साथे एकांत करवामां आदर करे.
४७ दुर्बल जनने पीरुवा शूरवीर थाय.
४८ प्रत्यक्ष दोषवाली स्त्री साथे राचे, रतिसुख करे.
४९ गुणनो अभ्यास करवामां क्षणेक रागी न होय.
५० द्रव्यादि संचय करीने पारके हाथे व्यय करावे.
५१ राजानी प्रशंसा करवा मौन धारण करे.
५२ लोकोनी आगल राजादिकनी निंदा करे.
५३ दुःख पडे थके दयामणो थाय.
५४ सुखमां वर्त्ततो थतो दुःख दारिद्र्यने विसारी मूके.
५५ अल्प वस्तुनुं रक्षण करवा माटे घणो व्यय करे.
५६ वस्तुनी परीक्षा करवाने अर्थे विष खाय.
५७ धातुर्वादे करी कमाववा माटे धननो नाश करे.
५८ क्षयरोगी थको रसायणनो रसीयो थाय.
५९ पोताना मुखे पोतानी मोटाइ करतो फरे.
६० रीसे करी आपघात करवानी इछा करे.
६१ निरर्थक फेरा खाय, व्यर्थ भमतो फरे.
६२ तीर वागे तोपण उभो उभो युद्ध जोया करे.
६३ शक्तिमान् साथे विरोध करी निश्चिंत सुवे.
६४ स्वल्प धन होय तोपण घणो आडंबर करे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६५ हुं पंडित हुं एम चिंतवतो वाचाल थाय.
६६ हुं सुभट हुं एवा गर्वथी निर्भय थको रहे.
६७ अति स्तुतिए वखाएयो थको उचाट आणे.
६८ वढवाऊनां वचन बोलतो मर्म प्रकाशे.
६९ जे दरिद्री निर्धन होय तेना हाथमां धन आपे.
७० जे कार्य सिद्ध थवानो संदेह होय तेवा कार्यमां धनव्यय करे.
७१ धननो व्यय करी नामुं करती वेलाए लेखुं जोतां संदेह आणे जे आटलुं द्रव्य केम खरचाइ गयुं?
७२ जे दैव करशे ते थाशे एवी आशा करी बेसी रहे, परंतु पुरुषार्थ कांइ पण करे नहीं.
७३ दरिद्री थतो जण जणनी पासे बेसे, वाचाल थाय.
७४ बीजाए वार्यो थको जमवुं विसारी मूके.
७५ गुणहीण थतो आपणा कुलने प्रशंसे.
७६ सभामां बेठो थको ऊंचवचे उठी जाय.
७७ भूत थइ जाय अने संदेशो विसारी मूके.
७८ उधरसनो व्याधि होय ने चोरी करवा चाले-प्रवर्त्ते.
७९ कीर्त्तिने अर्थे मोटो भोजननो वरो करे.
८० पोतानी प्रशंसा माटे थोडुं जमे, भूख सहे.
८१ स्त्रीना भयथी याचकने आवतां वारे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

७२ कृपणताने लीधे अपयश उपार्जन करे.
७३ प्रत्यक्ष दोषवाला माणसनां वखाण करे.
७४ साद घोघरो ठतां गीत गावा बेसे.
७५ थोडुं जमे अने जमवानुं अति रसयुक्त करे.
७६ चाटुक वचन बोलतो सामानुं निराकरण करे.
७७ वेश्यानो जे यार तेनी साथे कलह करे.
७८ बे जण मंत्र आलोच करता होय तिहां तेमनी पासे जइ वचमां उभो रहे.
७९ राजानो प्रसाद पामे ठते जाणे जे ए प्रसाद मारे निरंतर निश्चे रहेशे.
८० अन्याय करीने मोटाइनी वांछा करे.
८१ धनहीण ठतो जे जे कार्य धनथी थतां होय तेवां तेवां कार्यो करवानी वांछा करे.
८२ लोकोनी आगल पोतानुं तथा पारकुं गुह्य प्रकाश करतो फरे.
८३ कीर्त्तिने अर्थे अजाण्या माणसनो हामी थाय.
८४ जे हितशिक्षा करे तेनी उपर मत्सर आणे.
८५ सर्व कोइनो विश्वास करे एटले जेटलुं धोलुं तेटलुं सर्वे दूधज छे एम जाणे.
८६ लोकव्यवहार लोकाचारनी वात न जाणे.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

९७ पोते शिखारी छतां उनुं जमवा वांछे.
९८ पोते गुरु होय, पूज्य होय, मोटो होय, तेम छतां क्रियामां शिथिल थाय, परंतु सक्रियपणे न चाले.
९९ कुकर्म करी निर्लज्ज थाय, लोकलाज न करे.
१०० पोतेज वात करे अने पोतेज हसे.

ए उपर लखेलां लक्षणे करी जे युक्त होय ते मूर्ख जाणवो. ए मूर्खनां सो लक्षण कह्यां.

॥ इति मूर्खशतकं समाप्तं ॥

घरमां लक्ष्मी, मुखमां सरस्वती, बे बाहुमां शुरवीरपणुं, करतलमां दानपणुं, हृदयमां सारी बुद्धि, शरीरमां रुपालापणुं, दिशाउमां कीर्ति, गुणी जनमां संगति ए सघलुं प्राणीउने धर्मथी थाय छे, माटे सर्व इछाउने परिपूर्ण करनार धर्मने सेवो.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org